प्रार्थना के लाभ

प्रार्थना को मुख्य रूप से तीन प्रकारों में बाँटा जा सकता है:

1. धन्यवाद प्रार्थना
2. अपनी आवश्यकताओं को परमेश्वर के समक्ष प्रस्तुत करना
3. उद्घोष (घोषणा) प्रार्थना

1) धन्यवाद प्रार्थनाएँ

धन्यवाद प्रार्थनाएँ ईसाई जीवन की आधारशिला हैं। शास्त्र हमें आज्ञा देता है: “सभी परिस्थितियों में धन्यवाद करो” (1 थेस्सलुनीकियों 5:18)। आभार व्यक्त करना परमेश्वर को सभी अच्छे उपहारों का स्रोत मानता है (याकूब 1:17) और यह विनम्रता तथा उन पर निर्भरता दर्शाता है।

धन्यवाद में जीवन (भजन संहिता 139:13-16), स्वास्थ्य (3 यूहन्ना 1:2), और सुरक्षा—यहाँ तक कि अदृश्य खतरों और बुराई से—का परमेश्वर की स्तुति शामिल होती है (भजन संहिता 91)। जब हम अतीत में परमेश्वर की मुक्ति के लिए धन्यवाद देते हैं, तो हम उनकी निष्ठा और संप्रभुता को स्वीकारते हैं (विलाप 3:22-23)।

इस प्रकार की प्रार्थनाएँ विश्वास को मजबूत करती हैं और संतोष की भावना पैदा करती हैं (फिलिप्पियों 4:6-7), यह याद दिलाते हुए कि परमेश्वर हमारे जीवन के हर विवरण में गहराई से शामिल हैं।

2) अपनी आवश्यकताओं को परमेश्वर के समक्ष प्रस्तुत करना

यह अंतरcession (मध्यस्थता) का हृदय है—परमेश्वर के सामने विनम्रता और विश्वास के साथ आना, यह विश्वास करते हुए कि वह सुनते और उत्तर देते हैं (1 यूहन्ना 5:14-15)।

यीशु ने हमें साहसपूर्वक माँगने की शिक्षा दी: “हमें आज हमारी दैनिक रोटी दे” (मत्ती 6:11), परमेश्वर को हमारे प्रदाता के रूप में भरोसा करते हुए (यहोवा जिरेह, उत्पत्ति 22:14)।

हम बुद्धि (याकूब 1:5), स्वास्थ्य (भजन संहिता 103:2-3), बुराई से मुक्ति (मत्ती 6:13), और आत्मिक फल जैसे प्रेम, आनंद और शांति (गलातियों 5:22-23) की प्रार्थना करते हैं। हम प्रलोभन का विरोध करने और आज्ञाकारिता में बढ़ने की शक्ति मांगते हैं (इब्रानियों 4:15-16)।

यीशु ने विशेष रूप से अपने चेलों को चेताया कि “प्रार्थना करो कि तुम प्रलोभन में न पड़ो” (लूका 22:40), जो पाप पर विजय और प्रार्थना के बीच महत्वपूर्ण संबंध दिखाता है।

3) उद्घोष (घोषणा) प्रार्थनाएँ

यह प्रार्थना का रूप आध्यात्मिक युद्ध के शास्त्रीय सिद्धांतों के अनुरूप है। बाइबल बताती है कि ईसाई

“मांस और रक्त के खिलाफ नहीं, बल्कि बुरी आध्यात्मिक
शक्तियों के खिलाफ” युद्ध में लगे हैं (इफिसियों 6:12)।

प्रार्थना इस युद्ध में एक प्रमुख हथियार है।

जब कोई व्यक्ति पुनर्जन्मित होता है और आज्ञाकारिता में चलता है, तो परमेश्वर उसके चारों ओर सुरक्षा की दीवार रखते हैं (अय्यूब 1:10)। फिर भी, क्योंकि हम अभी भी नश्वर शरीरों में रहते हैं (2 कुरिन्थियों 5:1-4), हम “दुष्टों के आग के तीर” का सामना करते हैं (इफिसियों 6:16)।

शैतान अक्सर शाप, बोली गई बातें, या उद्घोषों के माध्यम से विश्वासियों को प्रभावित करने की कोशिश करता है जिनमें आध्यात्मिक शक्ति होती है (नीतिवचन 18:21)। यीशु ने बुराई पर अधिकार से बात की (लूका 4:36), और हम, उनके अनुयायी, बुलाए गए हैं कि “हर विचार को बंदी बनाकर मसीह की आज्ञा मानें” (2

कुरिन्थियों 10:5) और शत्रु का विरोध करें (याकूब 4:7)।

परमेश्वर ने अपने वचन से संसार को बनाया (यूहन्ना 1:1-3), इसलिए शब्दों में रचनात्मक शक्ति है। यही कारण है कि किसी व्यक्ति पर बोले गए आशीर्वाद या शाप उनके जीवन को प्रभावित कर सकते हैं (गिनती 23:8-10)।

शैतान इस शक्ति का उपयोग करके वि noश्वासियों पर बोली गई
बातों को हानि पहुँचाने के लिए प्रभावित करता है। फिर भी,
मसीह में परमेश्वर की सुरक्षा किसी भी शाप से बड़ी है
(रोमियों 8:37-39)।

इसलिए विश्वासियों को उद्घोष प्रार्थनाएँ करनी चाहिए, हर बुराई की योजना को यीशु के नाम में निरस्त करते हुए, अपने जीवन पर परमेश्वर के वादों की घोषणा करते हुए (भजन संहिता 91; यशायाह 54:17)। यह प्रार्थनाएँ परमेश्वर की सुरक्षा को मजबूत करती हैं और उनके शक्ति में विश्वास बढ़ाती हैं।

प्रतिदिन की घोषणाओं में आशीर्वाद बोलना, शाप को निरस्त करना, और जीवन के हर पहलू को यीशु के नाम में कवर करना शामिल है (मरकुस 11:23-24)। इसमें स्वास्थ्य, परिवार, कार्य और विश्वास शामिल

हैं।

जीभ की शक्ति पर जोर नीतिवचन 18:21 में है: “मृत्यु और जीवन
जीभ की शक्ति में हैं, और जो इसे प्यार करते हैं वे इसके फल खाएँगे।”

लगातार परमेश्वर के वचन की घोषणा करके, विश्वासियों ने शत्रु की योजनाओं को विफल किया और अपने आध्यात्मिक रक्षा को मजबूत किया।

कई ईसाई लोगों को तब सफलता मिलती है जब वे लगातार, शास्त्रनिष्ठ प्रार्थना को अपनाते हैं। प्रेरित पॉल विश्वासियों को प्रेरित करते हैं कि वे “परमेश्वर का पूर्ण शस्त्र धारण करें” और “हर अवसर पर आत्मा में प्रार्थना करें” (इफिसियों 6:11-18)। प्रार्थना ईसाई जीवन में वैकल्पिक नहीं बल्कि आवश्यक है।

यीशु ने गहन प्रार्थना का उदाहरण दिया, अक्सर पूरी रात पिता के साथ संवाद में बिताते थे (लूका 6:12)। उन्होंने अपने चेलों को लगातार प्रार्थना करने की शिक्षा दी (1 थेस्सलुनीकियों 5:17) और चेताया कि “आत्मा इच्छुक है, पर मांस दुर्बल है” (मत्ती 26:41)।

उनकी प्रार्थनाएँ उन्हें प्रलोभन और दुख में बनाए रखती थीं, जिससे विश्वासियों को दृढ़ता का महत्व समझ आता है।

अपने दिन की शुरुआत धन्यवाद के साथ करें, अपने अनुरोध विश्वास के साथ परमेश्वर के सामने रखें, और अपने जीवन पर उनके वादों की घोषणा करें। प्रार्थना एक लगातार, शक्तिशाली हथियार है जो परमेश्वर द्वारा हमें trials पार करने, प्रलोभन का विरोध करने और उनके साथ अंतरंगता बढ़ाने के लिए दिया गया है।

अन्य लोगों के लिए भी प्रार्थना करना याद रखें, शास्त्र में मध्यस्थ प्रार्थना के उदाहरण का पालन करते हुए (1 तिमोथी 2:1-4)।

परमेश्वर आपको प्रार्थना में दृढ़ता और आपके जीवन के हर क्षेत्र में विजय प्रदान करें!

Share on:
WhatsApp